

## श्री हनुमान चालीसा

॥ दोहा ॥

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुरु सुधारि ।  
बरनउँ रघुबर बिमल जस, जो दायक फल चारि ॥  
बुद्धिहीन तनु जानिकै, सुमिरौं पवनकुमार ।  
बल बुद्धि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेश बिकार ॥

॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर ।  
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥  
राम दूत अतुलित बल धामा ।  
अंजनि पुत्र पवनसुत नामा ॥  
महाबीर बिक्रम बजरंगी ।  
कुमति निवार सुमति के संगी ॥  
कंचन बरन बिराज सुबेसा ।  
कानन कुण्डल कुंचित केसा ॥  
हाथ बज्र अरु ध्वजा बिराजै ।  
काँधे मूँज जनेऊ छाजै ॥  
शंकर स्वयं केसरी नन्दन ।  
तेज प्रताप महा जग बन्दन ॥  
बिद्यावान गुणी अति चातुर ।  
राम काज करिबे को आतुर ॥  
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।  
राम लखन सीता मन बसिया ॥  
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा ।  
बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥  
भीम रूप धरि असुर सँहारे ।

रामचन्द्र के काज सँवारे ॥  
लाय सँजीवनि लखन जियाये ।  
श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥  
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई ।  
तुम मम प्रिय भरतहिं सम भाई ॥  
सहसबदन तुम्हरो जस गावैं ।  
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥  
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीशा ।  
नारद सारद सहित अहीशा ॥  
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ।  
कबि कोबिद कहि सकैं कहाँ ते ॥  
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ।  
राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥  
तुम्हरो मन्त्र बिभीषन माना ।  
लंकेश्वर भए सब जग जाना ॥  
जुग सहस्र जोजन पर भानू ।  
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥  
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।  
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥  
दुर्गम काज जगत के जे ते ।  
सुगम अनुग्रह तुम्हरे ते ते ॥  
राम दुआरे तुम रखवारे ।  
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥  
सब सुख लहहिं तुम्हारी शरना ।  
तुम रक्षक काहू को डर ना ॥  
आपन तेज सम्हारो आपे ।  
तीनों लोक हाँक ते काँपे ॥  
भूत पिशाच निकट नहि आवै ।  
महाबीर जब नाम सुनावै ॥

नासै रोग हरै सब पीरा ।  
जपत निरन्तर हनुमत बीरा ॥  
संकट तें हनुमान छुड़ावै ।  
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥  
सब पर राम तपस्वी राजा ।  
तिन के काज सकल तुम साजा ॥  
और मनोरथ जो कोई लावै ।  
सोइ अमित जीवन फल पावै ॥  
चारों जुग परताप तुम्हारा ।  
है परसिद्ध जगत उजियारा ॥  
साधु सन्त के तुम रखवारे ।  
असुर निकंदन राम दुलारे ॥  
अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता ।  
अस बर दीन जानकी माता ॥  
राम रसायन तुम्हरे पासा ।  
सदा रहो रघुपति के दासा ॥  
तुम्हरे भजन राम को पावै ।  
जनम जनम के दुःख बिसरावै ॥  
अन्त काल रघुबर पुर जाई ।  
जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ॥  
और देवता चित्त न धरई ।  
हनुमत् सेई सर्व सुख करई ॥  
संकट कटै मिटे सब पीरा ।  
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥  
जय जय जय हनुमान गौसाई ।  
कृपा करहु गुरुदेव की नाई ॥  
जो सत बार पाठ कर कोई ।  
छूटहि बंदि महासुख होई ॥  
जो यह पढ़ै हनुमान् चालीसा ।

होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥  
तुलसीदास सदा हरि चेरा ।  
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥

॥ दोहा ॥

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूर्ति रूप ।  
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥